(49) Online class.
Date - 15/5/2020
Time - 10:00 to 10:50 A.M.

Lecture No: 2

TOPIC

1. Spinoza: Substance.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A part - I paper - II (H)
A.N.D. College Shahpur
patory, Samastipur.

Ans:- आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में Spinoza का बुद्धिवादी दार्शनिक के रूप में अपना एक विशिष्ट स्थान है। वैसे तो ज्यादातर विचारकों का कहना है कि Spinoza का दर्शन मूल रूप से Descartes के दर्शन की पूर्व मान्यताओं पर आधारित है। और उसने उन्हें केवल परिवर्द्धित और पारिमार्जित किया है। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि Spinoza के दर्शन में मौलिकता का सर्वथा अभाव है। उन्होंने अपने दर्शन को पूर्ववर्ती विचारक Descartes की परम्परा में रखा जरूर है लेकिन देकार्तीय दर्शन में दर्शन से भिन्न अपने दर्शन का रूप प्रस्तुत किया है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Spinoza के दर्शन का सबसे प्रमुख अंग द्रव्य विचार है। अपने द्रव्य को विचार से भी इन्होंने देकार्तीय परिभाषा को ही स्वीकार किया है। किन्तु उनके निष्कर्ष Descartes से सर्वथा भिन्न रहे हैं।

Spinoza :→ द्रव्य की परिभाषा देते हुए इन्होंने किया है। :→ "A substance is that wich is itself a conceived though Itself is the existance of anything else." Spinoza

की यह परिभाषा स्पष्टतः देकार्तीय परिभाषा के अनुकूल है।

अर्थात Descartes की तरह ही Spinoza ने भी द्रव्य का नाम, उसकी स्वतंत्रता स्वीकार किया है। Spinoza के विचार ही सभी दार्शनिक से अलग ही प्रतीत होता है। इसलिए आखिर

p.T.O.

यह परिभाषा स्पष्टतः देकार्त की परिभाषा के अनुकूल है, अर्थात् Descartes की तरह ही Spinoza ने भी द्रव्य का गुण, उसकी स्वतंत्रता स्वीकार किया है, किन्तु Spinoza ने इसका विश्लेषण करते हुए भिन्न निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया है।

Spinoza के अनुसार Descartes की यह भूल थी कि उसने प्राथमिक एवं गौण दो प्रकार के द्रव्यों को स्वीकार किया। वस्तुतः द्रव्य की परिभाषा से ही स्पष्ट है कि द्रव्य की संख्या एक से अधिक नहीं हो सकती क्योंकि एक से अधिक हो जाने पर उसमें आत्म-निर्भरता का अभाव हो जाएगा।

अतः Spinoza के अनुसार द्रव्य ऐसी सत्ता है, जिस पर संसार की सभी वस्तुएं निर्भर करता है। Spinoza ने भी द्रव्य का गुण, उसकी स्वतन्त्रता स्वीकार किया है" etc END